हिन्दी उपन्यास : नारी विमर्श

संपादक
डॉ० शोभा वेरेकर

अभय प्रकाशन, कानपुर

ISBN : 978-93-80719-06-1

पुस्तक : हिन्दी उपन्यास : नारी विमर्श

संपादक : डॉ० शोभा वेरेकर

प्रकाशक : अभय प्रकाशन, 6A/540, आवास विकास
हंसपुरम् कानपुर–208 021
Mo. : 09451877266, 09305301995

संस्करण : प्रथम 2010

मूल्य : 360.00

शब्दसज्जा : विष्णु ग्राफिक्स, गल्ला मण्डी
नौबस्ता, कानपुर, मो० 08009017637

मुद्रक : मधुर प्रिण्टर्स
किदवई नगर, कानपुर

जिल्दसाज : तवारक अली, पटकापुर, कानपुर

HINDI UPANYANS : NARI VIMARSH

By : Dr. Shobha Verekar

Price : Rs. Three Hundred Sixty Only

19.

रोमांटिक अवसाद और शिल्प की जटिलता

– डॉ० रोहिताश्व

नासिरा शर्मा वर्ण, वर्ग, जाति, सम्प्रदाय, प्रांत, धर्म, आस्था विशेष से परे जाकर मानवीय संघर्ष और उदात्ता के चित्रण की 'समग्रताबोध' वाली रचनाकार है। जिसकी रचनाओं में यथार्थ का प्रतिबिम्ब ही नहीं पाया जाता है बल्कि मानवीय जीवन के अंतर्विरोध, अवसाद के क्षणों से मुक्ति, एकाकीपन के दंश से विलगाव बोध के क्षणों का अभूतपूर्व चित्रण उपलब्ध होता है।

संगसार और इब्ने मरियम के देशकाल, समाज और परिवेश का अंकन जहाँ उनकी अनुभूति और अभिव्यक्ति का फलक विस्तृत करता है वहाँ 'दूसरा ताजमहल' कहानी संग्रह की सात कहानियों का भावनापरक ताना-बाना अपनी ऐन्द्रिय संवेदना और अभिव्यक्ति के साँचों शिल्प-पैटर्नों का अभूतपूर्व वितान सिरजता है।

मानवीय जीवन में रोमांटिक भावबोध के उत्थान और पतन अवसाद के अनबूझे और विरल क्षण कई-कई मायनों में अभी भी सुरक्षित हैं। नासिरा शर्मा ने तो असफल प्रेम की सफल लेखिका अमृता प्रीतम की अनुकृति रचती हैं और न ही शोभा डे की कलम से अभिव्यक्ति रति प्रसंगों के बेबाक चित्रण की अनुभूति रचती है बल्कि वह एकाकी मन की चाह तड़पन की बुभुक्षित आत्मा की संवाहक चरित्र गाथा रचती है। नासिरा शर्मा शब्दों के कौल को अत्याधिक महत्त्व देने वाली कथाकार हैं। 'दूसरा ताजमहल' कहानी की कथावस्तु एक ओर रोमांटिक भावबोध की नयी पहल उम्रदराज होने पर भी नायिका नयना को रोमांटिक आसक्ति में उभरती है। वहीं लेखिक अपने अन्तर्मन में पाठकों के सहचिन्तन से रेखांकित करना चाहती है कि कोई भी व्यक्ति अपनी बातों पर टिकता नहीं। इसकी बुनियादी मजबूरी आर्थिक, सियासी, समाजी, व्यक्तिगत हो सकती है और होनी भी चाहिए। मगर जब वह जीवन शैली का अटूट अंग बन जाये तो परेशानी लगती है कि आदमी किन शब्दों को खुद समझे और उस पर टिका रहे। ईमान का वह कौन-सा पैमाना है जो ज़बान वर्तमान समय में तय करना चाहती है और शब्दों के अर्थ और महत्त्व को छल द्वारा समाप्त कर रही है।[1]

नयना वयस्क होते हुए भी प्रौढ़ावस्था की दहलीज़ पर प्रेम भरी पीगों पर झूलते हुए वास्तुविद रविभूषण के जीवन की रिक्तता को अपने आगोश में समेटने के लिए दिल्ली रवाना होती है।.... रिक्तता यहाँ तक नयना के जीवन में है कि उसने पिछले कई वर्षों से किसी का चुम्बन नहीं लिया है न पति का,.... न बेटों का.... स्पर्श की चाहत उम्र के हर मोड़ पर किसे नहीं होती है ?

नासिरा शर्मा ने किस्सागो शैली की अजीब शह पायी है। उसकी नायिका नयना केवल रोमाण्टिक वासना के व्यामोह में डूबी हुयी नहीं है। उम्र के परिपक्व दौर में वह यथार्थ और कल्पना के ताने-बाने पर सोचती है.... क्या बच्चे इस रिश्ते को स्वीकार कर पायेंगे... शायद वे मुझसे घृणा करने लगें। नयना अपने नैतिक प्रतिपक्ष के बारे में यह भी जतलाती है कि कभी उसके पति डॉ. नरेन्द्र का अपनी जूनियर डॉक्टर से अफेयर रहा है तब घर में तनाव ही तनाव था।[२]

नयना अपने वांछित प्रेम संबंध के मायाजाल का पक्ष-विपक्ष भी विचार लेती है कि अगर यह सब छलावा साबित हुआ और रविभूषण भी नगेन्द्र की तरह निकला तो वह क्या करेगी ? क्या तब वह अकेलापन सह पायेगी ? इस उम्र में सम्मोहन का क्या तर्क है ? वह अपने तई यह भी सोच लेती है.... प्रेम कहीं.... नहीं. ...नहीं.... फिर बम्बई में जवान औरतों की कमी थी, जो वह मेरी तरफ आकर्षित हुए ? नयना जानती रही है कि रविभूषण विवाहित है तीन बच्चों का बाप। उसके माता-पिता का देहान्त हो चुका है, इकलौती बहन ससुराल में खुश है। बड़ी बेटों का विवाह हो चुका है, बेटा केम्ब्रिज में अपनी विदेशी पत्नी के संग है केवल छोटी बेटी इण्टर करं रही है....। समाज का मुकाबला हर कदम पर हर तरह से नयना ने किया है।... अब वह हर अंजाम के लिए तैयार है।[३]

रविभूषण के ऑफिस में ही रिसेप्शनिस्ट रोजी से रविभूषण के अजीबोगरीब व्यवहार पुराने अफेयर्स, रात में की गयी बातों का आसक्ति के वायदों का दिन में दिन में भूल जाना... आदि का पता नयना को लगता है। वैसे हिन्दी के पाठकों को केसोनोवा का यह नया छद्म रूप सम्मोहक ही प्रतीत होगा। नयना के प्यार का ताजमहल.... जिस भावनात्मक लगाव की प्यास रवि रात के अन्तिम प्रहर तक फोनवार्ता में दर्शाता रहा है महीनों से.... वह शीशे का महल यथार्थ के थपेड़ों से दिग्भ्रमिता के व्यामोह सें चकनाचूर हो जाता है। रवि को खुद फैण्टेसी में विचारना अच्छा लगता है।[४] सोच की विपन्नताओं और दिल की दरिद्रता की ओर इशारा करते हुए हालात-ए-मन्जर उसे टूटन की कगार पर ले जाते हैं।

प्यार की हकीक़त जानकर नयना के पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक जाती है। क्यों कर रोमान्स की वे सारी बातें, सारे वायदे रवि के नशे की कैफियत रही है। क्या मौखिक शब्दों की कोई जिम्मेदारी नहीं होती ? कैसे विश्वास कर

लूँ कि उन शब्दों में रस नहीं था। भाव नहीं थे। निष्ठा नहीं थी। माना कि वे लिखित नहीं थे, मगर उन्होंने मुझे एक पूरा संसार दिया था।[५] नयना के बेसाखता बहते आँसू देखकर रोजी दिलासा देती है, सर को रात की बातें याद नहीं रहतीं, आप विश्वास करें,.... यूँ न रोएँ मैम।

रोजी नामक रिसेप्शनिस्ट किरदार जब नयना को सान्तवना देता है तो नासिरा शर्मा का हस्बे-मामूल (रविभूषण का) चित्रण उसे मानसिक रोगी अभिज्ञापित करवा देता है।[६] रविभूषण का बाहरी रूप 'पर्सोना' और आन्तरिक रूप शेडो विभाजित व्यक्तित्व का स्पलिट पर्सनालिटी का किरदार है। पर नयना अपने जीवनानुभव और मोहब्बत की खंडित स्थिति से जान लेती है कि रोजी वीराने की खण्डहर होती हुयी इमारतों को समझ नहीं सकती है। मेरी टूटन का वह हिसाब नहीं लगा सकती। अब चलना चाहिए।

'दूसरा ताजमहल' की व्यथा-कथा रोमाण्टिक हसरतों की टूटन और मोहब्बत की अनकही अनबूझी मृगतृष्णा है। नयना अपनत्व का प्यार का, बेतहाशा समर्पण का ताजमहल चाहती है, वह अगर डॉ० नगेन्द्र से न मिला तो रविभूषण से पाना चाहती है। सम्भवतः पुरुष के लिए प्यार का छलावा है, पर नारी के लिए मन-मरीचिका का तिलिस्मी आखेट है। नासिरा ने यथार्थ और कल्पना के ताने-बाने को, रोमाण्टिक त्रासदी को भाषा की शतरंज पर इस तरह बिछाया है कि कहानी का सत्य, अपनी निष्ठुर नैतिकता और अनैतिकता की नयी पर आधुनिकतम चौहद्दी में विश्वसनीय लगता है। अंत सिम्बोलिक ही है.... प्रेम की असफलता विश्वासहीनता से मुमताज की कब्र में दाखिल होना....। मृगतृष्णा के खण्डहरों में एक के बनिस्बत अन्य के संग की प्रतीति में आजीवन...अतृप्त भटकाव।

'तुम डाल-डाल हम पात-पात' कहानी युवा मानसिकता वाले अल्हड़ बेरोज़गार दोस्तों की अपने कमाऊ दोस्त के बल पर गुलछर्रे उड़ाने वाले इलाहाबादी नवयुवकों की दास्तान है। अच्छा लगता है कि नासिरा शर्मा अपनी कहानियों की थीम को, विषयवस्तु को रीपिट नहीं करती है और अपने विभिन्न किरदारों को समग्रता में पेश करती है। मानों वे हमारे आस-पास के परिवेश के जीते-जागते, टूटते-बिखरते, सँवरते-सहजते हाडमाँस का जिन्दा पात्र है। शाहगंज के थानेदार त्रिपाठी की रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार के तंत्र को वह रेखांकित ही नहीं करती है बल्कि किरायेदारों से मकान खाली कराने, बुढ़ापे में शादी कराने की दलाली वसूलने वाले पुलिसिया तंत्र की बछिया उखेड़ती है। युवा-बेरोजगार लड़कों की छीना-झपटी, यार-मुसाहिबी पुलिस से छेड़छाड़ की घटना के साथ-साथ वह मुस्लिम समाज की औरतों की दुर्दशा का बयान करती है।

माँ सिपतुन की हमदर्दी अपने जवान बेटे ज़हीर की बदहवासी व परेशानी भरी कारगुज़ारी से है। लगता है कि यह कहानी हिन्दुस्तान के कई-कई शहरों के बिखरे युवा पात्रों की विश्वसनीय ज़िन्दगानी से है। नासिरा शर्मा ने ज़हीर के माध्यम से युवा पीढ़ी की तल्खियत और बेचारगी को पेश किया है।

अमृतलाल नागर के लेखन की राह पर चलती हुयी नासिरा शर्मा बूढ़ी दादी और सिपतुन बहू मुरली और दादी में देहाती और उर्दू बोली तथा नाजो जमादारिन के संवादों में विभिन्न बोली-बानी की मिठास रेखांकित कर देती है। कहीं पुरानी जमींदारी के किस्से और बतकही है कहीं बाज़ार की नोक-झोंक, कहीं पिता और पुत्र के बीच साजिश, कहीं जिन्दगी की हैरानी और परेशानी है, कहीं जिजीविषा भरी कसक है। नासिरा शर्मा ने विवेच्य कहानी में बड़े ही विषम और खूबसूरत मंजरों को विभिन्न बोली-बानी मुहावरों और लोकोक्तियों से पेश किया है। भाषा-शैली और शिल्प पैटर्नों की प्रस्तुति के लिए....नासिरा शर्मा का कथा-लेखन वाकई एक समृद्धिपूर्ण और स्मृहणीय शब्द संसार है।

"और गोमती देखती रहती रही" कहानी की थीम सामान्य कहानियों से हटकर अलग लीक की कहानी है। जिसमें युवामन की धड़कने हैं, जीवन साथी के चयन के बारे में सरला की निजी पसंद का आग्रह है। सुधीर भी वर्किंग वूमन सरला को जीवन साथी बनाने से पहले संगीत, शराब और जीवन के स्वप्न को शेयर करने वाली नारी के रूप में परखना चाहता है। विवेच्य कहानी में मनोविश्लेषण सम्बन्धी ढेर सारी गुत्थियाँ हैं जो पाठकों से उदारमना होकर सोचने के लिए बाध्य करती है, जहाँ युवा मन की धड़कने एक-दूसरे को अपनाने से पहले आपस में अपनी शर्तों पर जाँचना और परखना चाहती है।

युवा नारी सरला नौकरी के सिलसिले में मामा के घर लखनऊ में ठहरी हुयी है। सरला पूर्व-दौर में लगभग एक दर्जन लड़कों को नकार चुकी है शादी के लिए देखने के सिलसिले में। उसका विचार मन्तव्य रूप में अपनी माँ से वार्तालाप के बीच रहा है कि "मेरी पसन्द का मर्द पैदा हुआ होगा इस दुनिया में घूमते-फिरते टकरा जायेगा। जब दिखेगा तब बता दूँगी।"[७] माँ को भी दुनियादारी से पता था। बेमेल विवाह करके भी लड़कियों को आजकल क्या मिल रहा है, जो वह भी जोर-जबरदस्ती से अपना कर्तव्य निभा दें तो साल दो साल बाद तलाक के कागज के साथ एक अदद बच्चा पालने में जीवन बिता दें, जो अक्सर जानने वालों के घर में देख रही है।

नासिरा शर्मा के पास अभिव्यक्ति-कौशल का एक विशेष मैनरिज्म है। उनके पास चित्रकला, फिल्म, संगीत, साहित्य, डेकोरेशन, मेडीसिन, शिक्षण क्षेत्र या व्यवसायी कैरियरिस्ट वर्ग के पात्र सक्रिय रहते हैं।

गोमती के किनारे टहलने जाने से पहले सुधीर के ऑफिस में दोनों शराब का जाम बराबरी से शेयर करते हैं और सिगरेटनोशी भी बराबरी के स्तर पर। (काश सूर्यबाला के स्त्री-पुरुष पात्र की इतने व्यावहारिक प्रगतिशील और एडवांस धर्मी होते, हाँ कमल कुमार के पात्रों ने लेस्बियन सम्बन्धों की बेबाकी तक तरक्की ज़रूर की है पर बैडोल और भदेस अन्दाज़ में) बल खाते हुए धुंए और ग़ज़ल के स्तर के बीच सरला को सुधीर मैनली लगा और सुधीर को सरला लावण्यमयी प्रतीत हुई।.... उधर मामा अपनी बहन को फोन पर बतला देते हैं कि अपनी अड़ियल घोड़ी (सरला) को सुधीर पसंद आ गया है।

सुधीर शब्दों का जौहरी है और अर्थ से खिलवाड़ करने वाला शख्स। वह सरला को गोमती के शमशानघाट पर अंधेरी राह व रात में प्रतीकात्मक वर्णन रचता है। यह वह जगह है जहाँ बिना शब्द के ज़िंदगी धड़कती है। जहाँ बिना चेहरे वाली कायाएँ हाथ में हाथ डाले रात भर डोलती है। आपको आपसे मिलवाने का और अपने बारे में सब कुछ बताने का इससे बेहतर मौका और कब मिलता? मैं वही हूँ.... मेरा नाम सुधीर है.... सुधीर बाबूजी ने यह नाम बहुत प्यार से रखा है।.... तेज़ कहकहा वातावरण में गूँज जाता है।.... सरला चौंक जाती है। आस-पास नज़रे डालने पर बायें वाले चबूतरे पर राख का ढेर था। उसके दूसरी तरफ एक-दो अधजली लकड़ियाँ, फीके अंगारों में बदली हुई थी। पूछती है वह सुधीर से आप मुझे कहाँ ले आयें ! प्रत्युत्तर मिलता है- "यह शमशान घाट है। इन्सानों की यात्रा का अन्तिम पड़ाव। सरला सोचती है 'ही इज वेरी क्रुएल.... क्या सुधीर नार्मल नहीं हैं ? साथ में लाए हुए खाने का पैकेट मौका पाकर एक कुत्ता झपटकर ले जाता है।.... थोड़ी देर बाद कुछ आदमियों का झुण्ड दुखी भाव से एक सफेद कपड़े में लिपटी बच्चे की लाश ले आता है।

सरला शमशान घाट के भुतहे परिवेश, जली हुयी लाशों की राख के करीब, बच्चे की लाश ले जाते हुए गमगीन झुण्ड के करीब थरथराती हुई सुधीर की अब्नार्मलिटी के बारे में सोचती है.... किसी की मृत आत्मा अपने सपने की अधूरी प्यास लिए भटकती-सी सुधीर के बदन में समा गई हो। कहीं-कहीं सुधीर पिशाच न हो।[८] नासिरा शर्मा ने शमशान के परिवेश का ही सटीक चित्रण ही नहीं रचा है बल्कि वह सुधीर और सरला की मानसिक उथल-पुथल, सन्देह और भय, उत्सुकता और अवसाद आतंक और सम्मोहन को पारदर्शी अन्दाज में पेश करने में निःसन्देह सफल व सम्प्रेषणीय हस्ताक्षर प्रतीत होती है।

सुधीर कहीं इम्तहान तो नहीं ले रहा है ? सरला के संशयग्रस्त चेहरे, बिखरे हुए मनोभावों को पढ़कर सुधीर कह देता है- "आपकी आँखों में अपने लिए अविश्वास और चेहरे पर भय देख रहा हूँ ? उसकी भयातुर अवस्था देखकर सुधीर

पछतावे का अनुभव करता है। सुधीर के बढ़े हुए हाथ की उष्मा अनुभव कर सरला अपना सिर उसके कन्धे पर टिका देती है जलते होंठ मिलन की मुद्रा में स्थिर हो जाते हैं। गर्म साँसें अंधेरे में अलाव की तरह सुलग उठती हैं। वर्णन पोएटिक है और पैथोस भरा। सुधीर अपनी विवशताभरी क्रुएल स्थिति और अंतश्चेतना की मनोविश्लेषणात्मक गुत्थी बयान करता है.... माँ-बापू जी से मिलवाने और कहाँ ले जाता, फिर तुम्हारा कहना भी कैसे टालता ? उन्हें तुम पसंद आई हो।"

एक गर्म स्पर्श सरला को अपने पूरे वजूद में सहलाता महसूस हुआ। सामान्य पाठक सुधीर को साईकिल केस या सेडिस्ट पात्र मान सकता है। पर विज्ञ पाठक महसूस कर सकता है कि कोई-कोई व्यक्ति अपने प्रिय की मृत्यु के बाद भी उसे सशरीर उपस्थिति-सा कहीं आसपास महसूस कर लेता है। गम, दर्द, अवसाद और खुशी हर्ष की मनःस्थिति में अपनी ही अन्तरआत्मा का स्मृणीय पर्याय मान बतिया लेता है।

महसूस किया जाता है- भावनात्मक स्तर पर जहाँ कोई तर्क नहीं, अविश्वास नहीं, ज्ञान नहीं बल्कि एक प्रतीति अदृश्य वेवलेन्थ सी अपने सरोकारों में डूबी रहती है। नासिरा शर्मा ने भावनाओं की इस अनबूझ पहेली को और गोमती देखती रही कहानी के माध्यम से सरला और सुधीर के रोमांस, भय, प्रेम और अपनत्व के सहज पलों में गूँथा है जिससे उसका कद अमृता प्रीतम, शिवानी, कृष्णा अग्निहोत्री और मृणाल पाण्डे से कहीं ऊँचा प्रतीत होता है जो असफल प्रेम की खण्डित आस्थाओं की सफल लेखिकाएँ मान ली गयी है।

'प्रोफेशिएनल वाईफ' वस्तुतः नासिरा शर्मा की आधुनिक जीवन के संघर्ष से परिपूर्ण और मनोविश्लेषण की उलझनों से ग्रस्त जटिल संवेदनाओं व शिल्प की कहानी है। परिवेश और वर्णन सीरियल लेखन, फिल्म निर्माण, स्क्रिप्ट राइटिंग और कार्यालय में कण्ट्राक्ट पर कार्य करने वाले पात्रों के अन्तः संघर्षपूर्ण ज़िन्दगी का है। सुधा और बनी अय्यर जैसे पात्र जीवन-संघर्ष में थपेड़े खाते हुए अपनी व्यावसायिक मंजिल की ओर अग्रसर होते नज़र आते है। टूटे हुए, बिखरे हुए, रिक्तताबोध पाने वाले विपरीत चरित्रों के नाम हैं सुधा और बनी अय्यर।

सुधा, विजय और बनी अय्यर का प्रोफेशिएनल त्रिकोण दरअसल अपनी-अपनी दिग्भ्रमित राहों की यथार्थपरक फैण्टेसी है। सामान्य पाठक यह सोचने के लिए विवश हो जायेगा कि प्रोफेशिएनल वाईफ क्या वह औरत है जो कहीं को कोरमकोर कैरियरिस्ट है, संवाद लेखिका का मुखौटा अपनाये हुए है या वह जो कार्यालय में ऑफिस टेबल से बेडरूम तक का साथ निभाने वाली नारी देह का छद्म है। प्रोफेशिएनल वाईफ कोई छलावा है, मृगतृष्णा है या अपना ही स्वरचित फैण्टेसी नारी रूप ?

संवाद लेखिका सुधा कहानी के प्रारम्भ में ही बनी अय्यर के ईर्ष्यालु स्वभाव और दोहरे चरित्र के मनोविज्ञान के बारे में सोचती है।.... जब वह पहली बार के मिलन अवसर दोनों हाथ जोड़कर कह रही हो.... जैसे कि पत्नी हो, जो घर आये मेहमान के साथ बदसलूकी से पेश आना अपना अधिकार समझती हो, खासकर पति की महिला परिचित से।... वही बनी बाद में अवसरवादी प्रवृत्ति से खुशनुमा अन्दाज में उसकी मिजाज़पुर्सी करते हुए विजय की सेक्सुअल हरकतों को जाहिर करती है।

बनी अय्यर जब सुधा के साथ अपनत्व के, अकेलेपन के क्षणों को शेयर करना चाहती है तो सुधा अपने प्रोफेशिएनल मित्र और बनी के बास विजय की टिप्स से पूर्वग्रह पाल लेती है। कारण विजय उसे पहले बता चुका है कि बनी बचपन में ही अपने घर के अधेड़ काने नौकर द्वारा रेप की जा चुकी है कई-कई दिनों तक। बनी की मानसिक स्थिति को जानकर वह उसके फिट आने की बेहोशी की स्थिति में प्यार से थपथपाता है, सहलाता है, कभी-कभी किस करके सहारा देता है। बनी अपनी मानसिक, शारीरिक उद्रेक की उलझन सुधा को बतलाती है कि वह पिछले आठ महीनों से सोयी नहीं है।[९] कारण उसके प्रति विजय का अवांछित सेक्सुएल बिवेहियर है।

कहानी के भीतर एक कहानी किरदार के भीतर एक आन्तरिक किरदार अंतश्चेतना की प्रवाहमयी भाषा किस्सागो शैली की विशेषता होती है। सुधा के जेहन के कई दरवाज़े बनी के अजीबोगरीब व्यवहार से खुल जाते हैं। बनी अय्यर भी एक जिन्दा किरदार है। आखिर मेरा काम सेलोलाईट पर्दे पर किरदार गढ़ना है। इन्सान की पेचीदगी को हम खोलते हैं फिर बनी उन इन्सानों से ग़लत तो नहीं है न ? बेशक हमारा काम साफ्टवेयर का है। मगर विजय तकनीकी है, वह निर्देशक है। मगर उसकी आँखें भी तो बिना बारीकी को पकड़े एक सवाल फिल्म का निर्माण नहीं कर पायेंगी।[१०] सुधा पटकथा लेखन के मध्य में विजय और बनी के अनसुलझे देह सम्बन्धों से व्यथित होकर विजय से बात किये बिना अनमने भाव से जयपुर लौट आती है।

नासिरा शर्मा ने कलात्मक ढंग से सुधा के माध्यम से नारी-विमर्श के अनछुए दंश और स्केण्डलनुमा हकीकत को बतलाया है कि कोई लड़की वह भी कमसिन.... बलात्कार का शिकार हो और उसकी माँ उसकी चाल ढाल से कुछ न समझे यह कैसे हो सकता है। लगता है नारी-विमर्श और नारीवादी मनोविश्लेषण की पकड़ नासिरा शर्मा में चित्रा मुद्गल और मृदुला गर्ग से ज्यादा है। नैरेशन है सुधा के अन्तर्मन का एक मोनोलाग के शिल्प पैटर्न में बनी एक पर्त नहीं बल्कि पर्तदार किरदार है।..... उसकी बाडी लाँग्वेज और मुँह बनाने के ढंग से जैसे स्टेज

का पर्दा उठ गया हो और किरदार मेरे सामने अभिनव शुरू करने वाला हो।... मैंने उसको गौर से देखा। गिरगिट की तरह रंग बदलने का लक्ष्य क्या है ? क्या चाहती है यह मुझसे।"[१]

बनी अय्यर बेबाकी के साथ आत्मपीड़न और सेक्सुएल फ्रस्ट्रेशन के बारे में सुधा से कहती है.... मरे जिस्म में न सेक्स की चाहत है और न ही मुझे किसी से प्यार हो सकता है। मेरे साथ एक-दो बार नहीं बल्कि कई बार मेरा बलात्कार हुआ है, मैं अन्दर से टूटी हुई हूँ। सर मुझे बहुत चाहते हैं मुझसे शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना, मगर मुझमें उमंग नहीं जगती है।.... सुधा परामर्श करती है विजय से और बनी को मनोवैज्ञानिक चिकित्सक डॉ० कौशल्या के पास ले जाती है जो उसे जबर्दस्त डिप्रेशन का शिकार बतलाती है और उसके सदमे का कारण उसके पास विजय का अवांछित व्यवहार बतलाती है।

स्क्रिप्ट राईटर सुधा एक व्यावहारिक महिला है, जो किन्हीं कारणों से परित्यक्त है तथा संतान ही न थी। पर उसका प्रोफेशिएनल एटीट्यूड और कैरियर किसी अन्य व्यक्ति की वासना का शिकार बनने से आगाह करते रहता है। वह अपने अनुभव और संवेदनात्मक बोध से कालान्तर में बनी अय्यर के व्यवहार से जान लेती है कि बनी की दमित इच्छाएँ कुछ और हैं जो उसको जाल बुनने को प्रेरित करता है। वह मूड होने पर विजय से दो-टूक सवाल-जवाब भी कर देती है और उसे किस करने, गुदगुदाने से मना भी कर देती है। किस्सागो शैली के अनुरूप प्रोफेशिएनल वाईफ में कई समानान्तर उप-कथाएँ भी चलती रहती हैं।... विदेशी पृष्ठभूमि का नावेल उठाकर सीरियल बनाने एवं फिल्म निर्माण की तजवीजें होती रहती हैं।

बातों-बातों में शातिराना भाव से बनी अय्यर यह भी जाहिर कर देती है कि विजय ने सुधा के अंतरंग जीवन की कई बातें भी उसे बतलायी हैं मसलन कि सुधा तलाकशुदा है, कोई औलाद नहीं, उनके पति ने दूसरा विवाह कर लिया है वगैरह-वगैरह। विजय की तरफ से नैरेटर सुधा के मन में खरौंचे आ जाती हैं।

विजय ने क्षति-पूर्ति भाव से, प्रायश्चित रूप में उससे यह भी कहा था कि वह तो बनी को सीख देने के लिए उसका उदाहरण दिया करता है। "आज की औरत को ऐसा ही बनना चाहिए। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। प्रोफेशन को ईश्वर का दूसरा रूप देना चाहिए। पर पर्सनल रिश्तों को लाईन अप करने की क्या जरूरत है।"[२]

बनी अय्यर दरअसल मक्कार औरतों के चरित्र का प्रतिनिधित्व ही नहीं करता है बल्कि विचार, संवेदना और व्यवहार के स्तर पर उसे जीता भी है। पर उसमें अपनी नैतिक इच्छाओं को पूरी करने का बल नहीं था। आखिरकार बनी

अय्यर के चरित्र पर स्टोरी लाईन बनाती है। दादा बनर्जी को लेकर वह विजय के ऑफिस में पहुँचती है। तब बनी अवाक् रह जाती है। विजय के चेहरे पर शर्मीली मुस्कान और आँखों में विश्वास झलकता है। वह बनी के सारे अपाईन्टमेन्ट कैन्सिल करके घर जाने को कह देता है। सुधा और दादा बनर्जी के साथ चाईनीज खाना खाने के लिए बाहर निकलता है।... बनी की आँखों में ईर्ष्या की चिंगारी झलकती देखकर तब सुधा कह देती है.... सुनो यह सम्बन्ध प्रोफेशनल है। बहुत गहरी हैं इनकी जड़ें तुम काट नहीं पाओगी... इसका रिश्ता शताब्दियों का है। तुम अपने को समेट लो।[१३]

बनी के चेहरे पर घर की पीलाहट पुती हुई थी। जो अक्सर प्रोफेशन के नाम पर वाइफ बनने वाली लड़कियों के मुँह पर कुछ अरसे बाद आ जाती है। कहानी दो औरतों और एक पुरुष के पारस्परिक सैक्स स्केण्डल या ईर्ष्या अवसाद भरे त्रिकोण पर आधारित न होकर वर्तमान दौर की पत्रकारिता, मास मीडिया या सीरियल फिल्म लेखन के बीच मानवीय सम्बन्धों की अन्तर्जटिलता पर आधारित है- नई शैली, नये अन्दाज, नयी तल्ख मिजाजी और जिजीविषा से परिपूर्ण, साथ ही शिल्प, कथन, भाषा-शैली के नये स्ट्रक्चर में मनोविश्लेषण की अन्तर्राह से सम्प्रेषित होती है।

'पंच नगीना वाले' कहानी एक विवादास्पद मुद्दे की कहानी है। हिन्दू परिवारों में सामान्यतः गौत्र, शाखा और करीबी रक्त परिवारों को टटोलकर शादी होती है। जबकि इस्लामिक और क्रिश्चियन परिवारों में माता-पिता के रक्त सम्बन्धों से हटकर चाचा, खाला और मामू के परिवार में स्त्री-पुरुष संबंध आम बात है।

नासिरा शर्मा ने खत्री परिवार के संयुक्त, मर्यादाशील परिवार की मान्यताओं, मर्यादाओं और ज्योतिष कर्मकाण्ड की खूबियों में विश्वास का वर्णन 'पंच नगीना वाले' जौहरी ज्योतिषराम के परिवार विवेचन से रचा है। जिनकी सुनारी जौहरी वाली दुकान से बनारस के हिन्दू-मुस्लिम परिवार पीढ़ियों से खरीददारी करते आ रहे हैं।

तरू और तुषार आपस में सगे ताऊ चाचा की संतानें हैं जो युवा होने पर यवनों वाले तौर-तरीके अपनाकर अपने परिवार के रक्त सम्बन्धों के होकर आपस में शादी करना चाहते हैं। हिन्दू मान्यताओं वाला खत्री परिवार सदमें में है। बालिग लोगों पर जोर जबरदस्ती नहीं चल पाती है। दोनों ही अपवाद रूप में शादी न होने की स्थिति में आजीवन अविवाहित रहने की मर्यादापूर्ण घोषणा कर देते हैं। खानदानी टंडन परिवार की हालत साँप-छछूंदर जैसी है। जिसे न उगलते बनता है और न निगलते।

मुहावरों और लोकोक्तियों का सटीक प्रयोग विवेच्य कहानी की जान है "कड़े से कड़े कठिन से कठिन समय में दादाजी ने समाधान ढूंढे हैं और काली घटाओं के घिरे आसमान के नीचे बिना भीगे बाहर निकल आये हैं।"[४] नासिरा के प्रेम विवाह और चाहत का नया चुनौतीपूर्ण कौशल तरू और तुषार के माध्यम से रचा है। दूसरी तरफ तुषार की इस पौरुषता से काँप उठे थे कि उसने शादी तरू से न होने की स्थिति में आजीवन ब्रह्मचर्य का जीवन अपनाने का इरादा कर लिया है। ऐसे प्रेमियों का क्या किया जा सकता है।[५]

समस्या को सुलझाने के लिए दादाजी तरू और तुषार की जन्मकुण्डली को लेकर बनारस के बड़े पंडित आचार्य ब्रह्मदेव के पास पहुँचते हैं। लगन और भविष्य का योग पूछने। भेंट-पूजा हेतु हीरा, मोती, पन्ना, मूँगा और पुखराज से बनी सोने की एक अँगूठी ले जाते हैं। जौहरियों, ज्यातिषियों एवं पुजारियों के विश्वास की अनोखी बानगी नासिरा शर्मा ने विवेच्य कहानी में रची है और साथ ही किस्सागो शैली में विभिन्न ज्योतिषियों की लालची और अस्पृहणीय वृत्ति को भी दर्शाया है पक्ष और विपक्ष रूप में।.... रात्रि में ब्रह्मदेव उन्हें तरू और तुषार के विवाह के धन के प्रबल योग और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त होने की संभावना बताते हैं। साथ ही विदा के समय अपनी दो पुत्रियाँ होने की चर्चा करके एक अन्य नगीनों वाली अँगूठी की प्राप्त होने की आकांक्षा....अपनी स्वार्थपूर्ण वृत्ति से जाहिर कर देते हैं।

ज्योतिषराम टंडन अपनी वृद्धावस्था में भी सही दुविधा ब्रह्मदेव को बतला नहीं पाते हैं। आश्चर्य यह भी है कि नासिरा शर्मा यह क्यों कर सोच नहीं पायी हैं कि ज्योतिषराम टंडन का खानदानी ज्योतिषी तरू और तुषार के नाम गण, नक्षत्र और पारिवारिक खत मिलान यानी नाड़ी दोष को क्यों नहीं लक्षित कर पाया. ... या वह यबन तौर-तरीकों को हिंदू परिवारों पर लागू करवाना चाहती है। प्रसंगानुसार ज्योतिषराम टंडन अन्यत्र एक पंडित सरजू पाण्डेय से पुनः जन्म कुण्डलियों के मिलान हेतु पहुँचते हैं। जो विचार विमर्श के पश्चात् उन्हें इसी वर्ष के अन्तिम सप्ताह की पच्चीस तारीख तक विवाह सम्पन्न कर लेने की सलाह देते हैं कारण आगे शनि की महादशा सात साल रहने की संभावना अभिज्ञापित कर देते हैं।..... साथ ही होने वाले तीन पुत्र रत्न और एक कन्या राशि होने की सम्भावना दर्शा देते हैं।

सरजू पाण्डेय की निस्पृहवृत्ति से आश्वस्त होकर ज्योतिषराम टंडन अपनी मानसिक दशा उजागर कर देते हैं।.... पंडितजी यदि ऐसा हो कि यह दोनों सगे भाइयों के पुत्र-पुत्री हो तो क्या यह विवाह अवैध माना जाएगा ? जवाब मिलता है....धर्म की दृष्टि से नहीं, परन्तु परम्परा की दृष्टि से हाँ, "यह तो आपके

मानने या न मानने पर है। उनका धर्म में कहीं उल्लेख नहीं है परन्तु लोग उस रिवाज को मानते हैं।

विवेच्य कहानी की थीम और विवेचन कम कण्ट्रोवर्सियल या साम्प्रदायिक विवाद का नहीं है। नासिरा शर्मा ने एक अन्तर्जटिल ज़हमत मोल ली है। कारण कहानी वाला समाधान न तो कट्टर सनातनी हिन्दू या वैष्णवी परिवारों को मान्य होगा और न ही सह-पारम्परिक हिन्दू विवाह ढाँचों में ग्राह्य होगा। पर इंसानियत और मानवीयता की दृष्टि से तरू और तुषार के प्रणय सम्बन्ध मान्य हो सकते हैं। ज़माने वाले तो यही कहेंगे कि "कलयुग तो देखो.... दो भाइयों की औलादें आपस में ब्याह रचा रहीं हैं।"[१६] परिवार की अन्य चार शादियों के समारोह में तरू और तुषार भी परिणयबद्ध हो जाते हैं गहमा-गहमी वाले संयुक्त परिवार के वातावरण में। पुखराज बहू का पैर इतना मुबारक साबित हुआ कि तरू और तुषार को कैम्ब्रिज में दाखिला मिल गया और विवाह के पन्द्रह दिन बाद बनारस से दिल्ली और दिल्ली से कैम्ब्रिज चले जाते हैं।

दादा ज्योतिषराम और दादी के संवाद कहानी के अन्त में एक पोएटिक जस्टिस के रूप में, पात्रों के अन्तःकरण वाले संवाद प्रतीत होते हैं... हम बहुत बड़े पाप से बच गये। आज यह घर शमशान होता अगर मैं समझदारी से काम न लेता। दादी का प्रत्युत्तर है....। हाँ तुम बादल न छाँटते तो काली घटा ने इस घर को निगल लिया होता। विवेच्य कहानी में पात्रों का वैचारिक खुलापन, परम्परा और आधुनिकता की टकराहट तथा व्यवहार की स्वतंत्रता का चित्रण अनुपम ढंग से रचा गया है।

'गली घूम गई' कहानी वर्तमान जीवन की विसंगतियों, नारी मन की अनेक पर्तों, अन्तर्विरोधों, टूटती ख़्वाहिशों और एकाकी जीवन में स्वीकार तथा अस्वीकार की मनोदशाओं की व्यथा-कथा है। कहानी की मुख्य पात्र 'मिनी' है। जिसका अफेयर कभी रोहित से रहा है। प्रसंगानुसार मिनी के पिता ने विवाहिता पत्नी, दो युवा पुत्रियों एवं युवा किशोर पुत्र को त्याग कर अधेड़ावस्था में अन्यत्र दूसरा विवाह रचा लिया है। जो कभी कभार परिवार में बिन बुलाये हुए मेहमान की तरह दो वर्ष बाद अपने नवजात पुत्र को लेकर चले आते हैं। मिनी की माँ सिलाई करके घर चलाती हैं। मिनी रिसर्च कर रही है। ऋतु विवाहिता है। रूमा बी० ए० पार्ट वन में है और राजेश ने कम्प्यूटर ज्वाइन कर रखा है। ऋतु की शादी में कुमार साहब ने (जो अपनी अधेड़ उम्र में दूसरा विवाह रचा चुके हैं) कन्यादान के लिए जो सोने का सैट व कपड़ा लत्ता लाये थे वे मिनी की माँ ने वापस लौटा दिये।

मिनी एक जागरूक और ज़िन्दा दिल कैरेक्टर है। घर में आये हुए ऋतु के विवाह के लोगों ने बड़ी बहन की जगह उसे पसन्द कर लिया था। पर बाद में अन्यत्र शादी ठहरा ली। जिससे वह औरतों की तयशुदा जिंदगी और अपनी हरशतों की लाश के बारे में सोचती है "जब मैं ज़िंदगी की दौड़ में तेजी से भाग रही थी तब मुझे अकस्मात् रोक क्यों लिया गया। जब चारों खाने चित्त गिरी तो मेरे घाव पर किसी ने नज़र न डाली कि मुझ पर क्या गुज़र रही है बस उपदेश, पुरसा, दुख और न समाप्त होने वाली बात कही।"[१७]

प्रेम की अतृप्त चाह और अपनत्व की खोयी हुई लालसा से वह सोचती है.... समय के समन्दर में रोहित भी कहीं गुम हो गया है। वह निराशा, हताशा में न डूबकर जिजीविषा के साथ अपनी अधूरी थीसिस पूरी करने व जीवन निर्माण का नया संकल्प तलाशने लगती है।.... ऋतु और मिनी की ग़लतफ़हमी भी एक बार अकेले में अपनत्व की बातों से दूर होती हैं। विवेच्य कहानी 'गली घूम गई' में छोटा भाई राजेश नौकरी पाकर विवाह कर लेता है। ऋतु के प्रयत्नों से ही रोहित फोन-पत्र द्वारा मिनी की ज़िन्दगी के थपेड़ों के सहजने और नयी राह अपनाने की प्रेरणा देता है। संयुक्त परिवार की परम्परा के अनुकूल जब विवाह हेतु रिश्ता आता है तो ऋतु ही समझाती है....., प्रेम का अर्थ केवल एक साथ जीना नहीं बल्कि दूर रहकर भी साथ-साथ जीना होता है। तू तो भावना की फलक पहचानती है। सरोकारों के विस्तार की भी पारखी है फिर झिझक क्यों रही है। जीवन में जो मिला है, उस हिस्से को निडर होकर पी चाहे वह ज़हर ही क्यों न हो।[१८]

नारी मन की अनेक परतें होती हैं, चाहत की, अपनत्व की, स्वीकार की और अस्वीकार की। नारी-विमर्श कोई प्रतियोगिता का दंगल या स्टेज नहीं है पुरुष जगत् से। वह तो यथार्थ को स्वीकार करने वाला जीवन बोध है। आत्मनिर्भरता का, आर्थिक रचनाा में अपने स्वत्वबोध का। 'गली घूम गई' की होनी- अनहोनी की परिस्थिति के अनुसार शिल्प शैली वर्तमान और फ्लैश बैंक के क्षणों में वैचारिक अन्तर्द्वन्द्वों की भाषा-शैली मुहावरों की चुस्ती के साथ।

"संदूकची' कहानी में संयुक्त परिवार की ईर्ष्या, कलह, बतकही....औरतों की षड्यंत्रकारी प्रवृत्ति और अपनत्व के बोध का निरूपण है। यहाँ भी नासिरा शर्मा प्रथम पुरुष की नैरेटर शैली इस्तेमाल करती है।...नया मकान बना है.. बढ़ई के लगातार काम से बुरादे की पर्त घर भर में छायी हुई है। अमेरिका जाने वाले भाई को विदा कर माँ रामनगर से आई है। पति रमेश ने अपना पैतृक गृह बेचकर शहर में नया मकान लोन और सेविंग आदि से बनवाया।

कहानी की नैरेटर सुमन अपनी विधवा माँ के आत्मसंघर्ष, गृहस्थी की चीजें बेचने का वर्णन करने में कोताही नहीं बरतती है। गगरे, थालियाँ, लोटे, कटोरे, देंगे और लुटिया अदि बेचने में.....भैय्या की फीस अदा करने, गृह चलाने के लिए माँ का दिल नहीं दुखा था। पर जिस जेवर को बेचना होता उसे हाथ में लेकर बड़ी देर तक हसरतों से देखती रहती।.....जैसे उसके बहाने से अतीत की स्मृतियां में डूब जाती थी कि कब, कहाँ इसको पहना होगा।

नासिरा शर्मा के पास नारीमन की कई अनछुई दास्ताने विस्मृति के गर्भ से निकल कर आती है। जो नारी विमर्श की होनी अनहोनी लोककथा जैसी है। शादी के बाद कहानी की नैरेटर सुमन जब रामगढ़ अपने मायके जाती है, रात में आवाजें सुनकर माँ के कमरे में जलती हुई बत्ती देखकर जाती है तो माँ जेवर की खुली सदूकची खोले बैठी है, टटोलती है, खाली खानों के हिस्सें में, जेवरों की सूची और रसीदें देख रही है.....पहले जब सुमन गर्दिश के दौर में सतलड़ा हार बचेने गयी थी तब धीरे से उन्होंने कहा था कि यह मेरी पहनानी की निशानी है जो घर की लड़की को देने की परम्परा थी। माँ ने मुझे देते हुए कहा था कि दे तुम्हें बेचने केलिए रही हूँ मगर यह तुम्हारी बेटी की अमानत है।...माँ का करूणा से भरा इतना कमजोर और बेचारा चेहरा। मैंने इससे पहले कभी नहीं देखा था।"[१६]

संयुक्त परिवार के जिम्मेदार शख्श को कभी-कभी अपने दायित्वबोध में अपनी ही इच्छाओं का पोस्टमार्टम देखना पड़ता है।

कहानी में परिवर्तन कर्कशा चाची के आने से होता है। कलहप्रिय भी है, वक्त-बेवक्त वह माँ पर भी तानाशाही कर लेती है। चाची को अपने भतीजे रमेश के नये घर की सजावट और शान-शौकत से कम ईर्ष्या नही है। माँ वापस रामनगर लौटना चाहती है। पर यात्रा के दिन बाथरूम में पैर फिसल जाने से पैर की हड्डी टूट जाती है। रिजर्वशन का टिकट लौटा दिया जाता है। माँ की सेवा सुरक्षा केलिए मामी दूसरे सप्ताह कलकत्ता पहुँच जाती है।

सुमन की माँ पट्टी बंधे पैर के बावजूद अपनी पुरानी हसरतों के चलते अलमारी के एक गुप्त खाने में अक्सर कुछ रखती और टटोलती रहती है। चाची उस पर कटाक्ष करती रहती है.....ऋचा तुम्हारी नानी अलमारी में हरदम क्या रखती उठाती हैं ? वह भी आधी रात को ? वह उन पर चोरी का इल्जाम लगाने से भी बाज नहीं आती है। सुमन भी आतंकित होती है चाची के खटराग से, क्योंकि रोने-धोने कलह करने और जबान खोलने से घर में महाभारत मच जाता और गली-मुहल्ले के लोगों के लिए नया काण्ड होता।

माँ की हालत मनोव्यथा अपमान और घुटन से हालत दिन ब दिन खराब होती रहती है। वह अपना दुख दूसरों से जाहिर न करके भीतरी मन में अन्तर्यात्राएँ

करती रहती हैं। दो दिन बाद ऋचा और प्राची के हॉस्टल से लौट आने के बाद उनके स्पर्श से सुमन की माँ का बदन सिहर उठता था। कहानी अंत में माँ की सोती हुयी अवस्था में गुजर जाने का जिक्र है।.....माँ के गुजरने पर सुमन की आँख से एक भी कतरा आँसू नहीं गिरता।

'सन्दूकची' कहानी सुमन की माँ की संघर्ष भरी दास्तान ही नहीं है बल्कि वह खानदान की बची-कुची वस्तुएँ गर्दिश के दिनों के बेचने वाली स्त्री के मान-मर्दन की भी है। उससे भी ज्यादा किसी के अकारण लाछंन और अपमान का बोध है। आत्मघाती स्तर पर एकान्त में वह खोली सन्दूकची और गुप्त तिजोरीनुमा बंद खाने खोलने में आत्मविस्मृति पाती है। माँ की मृत्यु के बाद सुमन एक बारगी रात के अंतिम पहर में उसके कमरे में जाती है जहाँ मामी दिया जलाये कमरे में लेटी है पर चाची अलमारी की दराज में उस वक्त हाथ डाले कुछ टटोल रही है।

संयुक्त परिवार में अक्सर होने वाली षड्यंत्रपूर्ण नीति, ईष्या और कलह को मूर्तिमन्त करने वाली 'संदूकची' कहानी में स्वाभिमान, संवेदनशील सुमन की आवाजें माँ के प्रति चाची के अविश्वास और घातभरी चालों के कारण चीख में उभरती हैं। चाची का चेहरा कोरे लट्ठे की तरह सफेद हो जाता है।.....दराज के खाने खाली रहते हैं। सुमन चींखती है देखिए.....अच्छी तरह से इतमिनान कर लीजिए।.....कुछ छुपा तो नहीं है। दराज फर्श पर पटक दिया जाता है। .....क्या माँ कुछ छुपाकर अपने साथ ले गयी है।

कहानी का अन्त मर्मस्पर्शी कथन से होता है....'मैं किसी को नहीं बता पाई कि माँ उस खाली दराज में क्या रखकर ताला लगाती थी ?' कहानी अवसाद, क्षोभ, वितृष्णा के छोर पर खत्म होती है और संयुक्त परिवार के बचे हुए अवशोषों में कलहप्रिय और शांतिप्रिय स्त्रियों की चारित्रिक विषमताकी आंतरिक पर्तों को उधेड़ते हुए ...प्रश्न मन में उभरता है कि नारी-विमर्श के अनछुए प्रसंगों को क्या हमारे समय के बागबीर, पक्षधर आलोचक देख रहे हैं।

नासिरा शर्मा संभवतः एक ऐसी रचनाकार है जो मुस्लिम समाज की नारियों के अन्तर्मन को भी सूक्ष्मता से रेखांकित करती है। उनकी बोली बानी और अभिव्यक्ति में और हिन्दू समाज की जद्दोजहद झेलती संवेदनशील और केरियरिष्ट नारियों के जीवन दंश की अनेकानेक पर्तों को भी प्रतिबिम्बत ही नहीं बल्कि युगीन परिवेश को बदलते माहौल को रेखांकित करने में समर्थ है। प्रसंगानुसार शैली, विवेचन शैली, संवाद शैली, मोनोलाग, आत्मालोचन, फ्लैशबैंक शैली को मनोविश्लेषण की गहराइयों से पेश करने वाली वह हमारे दौर की एक समर्थ हस्ताक्षर है।

संदर्भ सूची

१. नासिरा शर्मा, दूसरा ताजमहल, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, दो शब्द, पृ० ७
२. वही, पृ० २४
३. वही, पृ० २६
४. वही, पृ० ३०
५. वही, पृ० ३२
६. वही, पृ० ३२,३३
७. वही, पृ० ६४
८. वही, पृ० ६८
९. वही, पृ० ८२
१०. वही, पृ० ८२
११. वही, पृ० ८३
१२. वही, पृ० ८५
१३. वही, पृ० ९९
१४. वही, पृ० ११३
१५. वही, पृ० ११४
१६. वही, पृ० १२१
१७. वही, पृ० १२७
१८. वही, पृ० १५०
१९. वही, पृ० १५९